THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

हमारा अनन्त मूल्य

Our infinite value

Author: Michele Newport

The Christian Science Sentinel Vol. 113, No. 27, July 4, 2011

दोहरे या तिहरे बर्गरज, 62 – आँऊस पेय प्रदार्थ, गोदाम से खरीददारी – जितना बड़ा उतना बढ़िया।

यह आज का मशहूर संदेंश है और यह इस प्रस्तावना पर आधारित है कि बड़ा परिमाण और थोड़े दाम का मूल्य बराबर है। कीर्ति–लक्षित खबर अक्सर यह सुझाव भी देती है कि प्रसिद्धि के लिए लोगों का मूल्य उनकी मीडिया में प्रस्तुति या उन्हें मिलने वाली तनख्वाह के आधार पर आँका जाता है। यह यकीन्न ही मूल्य आँकने के आसान तरीके है, पर क्या यह सही है? क्या मूल्य परिमाण, घनता, कीमत या कीर्ति से आँका जा सकता है?

कुछ महीने पहले एक दिन मैंने अपने आपको अपने घर में बैठे हुए, बैडरूम में एक छोटी मेज को देखते हुए, मूल्य के विषय पर विचार करते पाया। मेरे पति और मैंने कुछ वर्ष पहले इसे मेयन के स्टीर से खरीदा था, जो कि सुंदर कारीगरी किए हुए हाथ से बने फर्नीचर को बेचते थे। उस समय हम सारी सुँदर चीजों को देखकर उत्साहित थे परन्तु हम बहुत ही छोटे गोल, सादे बनाए गए मेज़ से ज्यादा नहीं ले सकते थे। लकड़ी रंग में गहरी है और कारीगरी की विशिष्टता दोषरहित है किन्तु हमने पाया कि इसकी निश्चित सुंदरता पर घर में आने वालों द्वारा बहुत कम ध्यान दिया जाता है। यह मायने नहीं रखता है कि हम ने घर में इसको कहाँ रखा है, परन्तु इसके छोटे साईज और सादेपन के कारण मेहमान इस नजरअंदाज कर देते थे।

जैसे मैं इस सुंदर मेज को देख रही थी, मुझे इसके असली मूल्य पर हैरानी हुई। इसके डिजाईन और बनावट में लगा प्यार तथा ध्यान चाहे स्पष्ट रूप से कईयों को दिखाई नहीं देता था पर क्या इससे मेज की कीमत बदल गई थी? क्या इसका मूल्य बढ़ जाता अगर लोगों ने जोश दिखाया होता या इतनी अद्भुत खरीद के लिए हमारी प्रँशसा की होती?

मुझे ऐसा लगता है कि मेज का मूल्य इसके गुणों से आँका जा सकता था। इसमें केवल लकड़ी ही शामिल नहीं अपितु वह गुण भी हैं जो कि इसको बनाने में लगे जैसे कि कला निपुणता, सृजनात्मकता तथा हर भाग पर विशेष ध्यान। मैं इन्हें प्रकृति के प्रतिमा तराशने के रूप में दर्शाए गए प्रेम के रूप में देखती हूँ जिसे हम एक वृक्ष तथा कारीगर का उस प्राकृतिक प्रतिमा के लिए दर्शाया गया प्यार एक सुंदर रूप में नक्काशी करके तथा ढाल कर जो कि उस लकड़ी की सुदंरता को ओर बढ़ा देगा, कहते हैं। मेज का मूल्य वास्तव में बाहरी धारणाओं या उस पर दिए जाने वाले ध्यान के अनुपात में नहीं आँका जा सकता। सच्चा मूल्य बदलती हुई कसौटी की बजाए प्रदार्थ की रचना में है।

जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [language], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मूल्य के बारे में अन्तः ज्ञान सही समय पर आया। मैं उस दिन असराहनीय महसूस कर रही थी। मैंनें अपने आप को पूर्ण यकीन दिला दिया था कि नौकरी तथा घर में मेरे योगदान को दूसरों द्वारा मान्यता नहीं मिलती थी। इसलिए मैंने अपने आपको इस छोटे मेज की तरह महसूस किया जो कि एक लाक्षणिक कोने में पड़ा था और जिसकी अवहेलना हो रही थी। मैंने परमेश्वर से पूछा कि क्या मैं मूल्यवान हूँ और अगर हूँ तो इसका पता किसे चलना है?

मूल्य की आध्यात्मिक समझ हमें प्यार महसूस करने देती है और हमें ऊँचा उठाती है।

मुझे बहुत ही सहज जबाव मिला "यकीनन तुम परमश्वेर की नजरों में मूल्यवान हो।" बाइबल भी यही कहती है कि वह मेरे में खुश होता है–एक अच्छे मानव के पदचिन्ह परमेश्वर द्वारा क्रमित होते है और वह अपने तरीके में खुश होता है (भजनसंहिता 37:23) मूल्य की सही समझ, एक आध्यात्मिक समझ, हमे प्यार महसूस करने देती है और हमें ऊँचा उठाती है चाहे हम जो कर रहे हैं वह खबर के काबिल नहीं है या हमें पहचान नहीं दे रहा।

मेरी बेकर ऐडी ने 1902 में चर्च मैंबरज़ को दिए गए भाषण में दूसरों द्वारा प्रशसा तथा पहचान की चाह के बारे में जिक्र किया 'अपने रोजमर्रा के जीवन के बारे में विचार करो; इसके जवाब को अपने उद्देश्यों, प्रेरकों तथा इच्छित लक्ष्यों तक ले जाओ ओर वर्षो की यह उद्घोषणा संसार की लचीली चापलूसी और उसके आक्रोशों को उड़ा देगी। (मदर चर्च को संदेंश 1902, पृष्ठ 17) क्या ऐसा करना हमे चैन नही देगा? यह हमारी सच्चे आध्यात्मिक मूल्य को समझने की कुंजी है। कहीं, श्रीमति ऐडी ने क्रिश्चियन साँयटिस्टों को उत्साहित किया तब जान लो कि तुम्हारे पास सही ढ़ंग से सोचने और काम करने की श्रेष्ठ शक्ति है, और कुछ भी तुम्हारी इस विरासत और प्रेम के अतिक्रमण को छीन नहीं सकता .....

"क्या मानव आध्यात्मिक तथा गाणितिक रूप में एक अँक, एक इकाई नहीं है और इसलिए एक पूर्ण अँक अपने दिव्य सिद्धांत, परमेश्वर द्वारा शासित तथा सँरक्षित? तुम्हें सरलता से अपने दिव्य स्त्रोत के साथ एकता की वैज्ञानिक सकारात्मक समझ को सँरक्षित करना होगा तथा इसे प्रतिदिन प्रत्यक्षीकृत करना होगा। तब तुम पाओगे कि एक उसी तरह ही महत्वपूर्ण कारक है जैसे अस्तित्व में एक का बारहवाँ हिस्सा तथा सही कार्य करते हुए और इस तरह सुदृश सिद्धान्त को प्रत्यक्षीकृत करते हुए। (Pulpit And Press, पृष्ठ 3 – 4)

हम में से हर एक असीमित रूप में मूल्यवान है। परन्तु हम इस मूल्य को अपनी सच्ची विरासत को देख कर पहचान सकते हैं जैसे श्रीमति ऐडी ने वर्णन किया है; सही ढंग से काम करने के लिए, श्रेष्ठ शक्ति का स्वामी होते हुए, मानव का मूल्य आध्यात्मिक तथ्य से उत्पन्न होता है कि वह सब का रचयिता, आत्मा का प्रतिबिम्ब है। हम मे से हर एक, दिव्य प्रेम, परमेश्वर की पूर्ण व्यक्तिगत, अभिव्यक्ति है। और यह जानते हुए कि "कोई भी एक के बारहवें हिस्से की तरह महत्वपूर्ण खण्ड है" का अर्थ है कि मेरे लिए अस्तित्व के उच्च स्तर पर बने रहना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना दूसरों के लिए सार्वजनिक दफ्तर या उच्च स्तर की पदवी। ईमानदारी का एक छोटा सा कार्य एक बड़े कार्य की तरह ही महत्वपूर्ण है। चाहे एक छोटा से कार्य बहुत से लोगों को दिखाई नही देता, यह हमारे सामूहिक मानसिक वातावरण, हमारे पड़ोस, हमारे उपगृह पर इसके प्रभाव को कम मूल्यवान नहीं बनाता।

उस दिन मैंने यह सोचने में कुछ समय बिताया कि कैसे परमेश्वर ने, हम मे से हर एक, पुरूषों तथा स्त्रियों को अपने रूप तथा प्रतिबिम्ब में बनाया है। और मैंने यह देखना शुरू किया कि मैं इन्सानी धारणाओं या ध्यान पर आधारित मूल्य के बोध से परे हट सकता था और उन की तरफ जो आध्यात्मिक गुणों जो

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

ईमानदारी, स्थिरता, दयालुता तथा दूरदर्शिता की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को संजोते हैं। मैंने देखा कि मैं अच्छाई में आनन्द मना सकता था जो कि मै तथा दूसरे समाज में जोड़ते हैं–योगदान जो छोटा होते हुए भी बना रहेगा।

मैं मरकुस की किताब में एक विधवा द्वारा चर्च को दिए गए दो माईट के वर्णन से प्रेरित थी। (देंखें पृष्ठ 12:41–44) एक माईट सब से छोटे यहूदी सिक्के, लगभग आधा सेंट और शायद स्त्री के अगले भोजन के बराबर था। जीसस, फिर भी परमेश्वर के मापदंड की मानव के साथ तुलना करते हैं (देखें **Interpreter's Bible Vol 7**, पृष्ठ 852) और इशारा करते है कि विधवा का तोहफा बहुत मूल्यवान था– यकीनन, अमीर लोगो द्वारा दी गई बहुत ज्यादा मात्रा से भी मूल्यवान, क्योंकि वह अपना सब कुछ देने के लिए तैयार थी, चाहे वह बहुत ज्यादा नहीं था। विधवा का अपना बलिदान उसकी परमेश्वर की अच्छाई के लिए प्रत्यक्ष कृतज्ञता एक बहादुर कार्य था और उसने एक दयालु और निडर दिल दिखाते हुए दो छोटे सिक्के प्यार और गहरे विश्वास के साथ दिए। जीसस ने उसकी अत्यंत निष्ठापूर्ण इच्छा का मूल्य आँका न कि दी गई राशि का।

इस तरह की शैली में श्रीमति ऐडी ने लिखा "प्रेम एक न्यूनतम आध्यात्मिक विचार को सामर्थ्य, अनश्वरता तथा अच्छाई देता है जो कि सब में से चमकती है जैसे कि एक कली में से पुष्प चमकता है। (साँयस ऍड हैल्थ पृष्ठ 518) वह, एक काफी बड़े विचार को वर्णित कर रही हैं, चाहे वह इसे न्यूनतम ही कहती हैं। जैसे कि मैं देखती हूँ 'न्यूनतम' शब्द का अर्थ घटिया नहीं है, इसका सरलता से अर्थ है कि यह पूर्ण नहीं है परन्तु यह एक मिश्रित विचार का निर्णायक हिस्सा है जैसे कि पानी की बूँद एक समुद्र का हिस्सा है (देखें साँयस एंड हैल्थ, पृष्ठ 361) इस 'न्यून्तम' का असली मूल्य उसके गुण में है न कि मापदँड वाली मात्रा में। वास्तव में हर एक आध्यात्मिक विचार असीमित है, क्योंकि उसके जीवन का सीधा स्त्रोत दिव्य जीवन और प्रेम है। इस की सीमा नहीं कि एक आध्यात्मिक विचार क्या अभिव्यक्त कर सकता है क्योंकि इसकी शक्ति व्यक्तिगत नही है परंतु प्रतिबिम्ब में है।

यह विचार सांत्वना देने वाले थे और जैसे मैं उस दोपहर प्रार्थना करती नहीं, मेरी निराशा की भावना लुप्त हो गई। और मैं परमेश्वर, अच्छाई के करीब महसूस करने लगी। मैंने देखा कि मैं परमश्वेर की नजरों में अनन्त मूल्यवान थी।

मूल्य की यह गहरी सुंदर भावना तब से बढ़ने लगी और मेरे जीवन को धनी बना दिया। अब, लगभग हर रविवार मैं एक या दो क्षण 'सच्चे मूल्य' के इस विचार पर चिन्तन करते हुए बिताती हूँ। मैं एक चर्च में जाती हूँ। जिसमे एक बड़ा वाद्य है। इस में हजारों नलियाँ हैं, परन्तु केवल कुछ ही दिखाई देती हैं। सभा चाहे वाद्य के ऊपर बुलन्द बड़ी प्रभावशाली नलियों से प्रभावित हो जाती हो परंतु वहाँ पर कई सौ छोटी नलियाँ है और हर एक वाद्य की योग्यता के लिए महत्वपूर्ण, सुंदर तथा शक्तिप्रद संगीत प्रदान करने के लिए। छोटी नलियों के बिना वाद्य अपनी स्थिरता खो देता, यह पूर्ण और पूरा नहीं हो सकता था। हर एक नली को किसी कारण वहाँ रखा गया था और प्रत्येक नली वाद्य और संगीत की सारी शक्ति तथा उदेद्श्य के लिए महत्वपूर्ण है। बिल्कुल इसी तरह हमारी हर एक प्रतिभा, गुण तथा भाव हमें परमेश्वर की पूर्ण रचना का अटूट हिस्सा बना देती है।

हम श्रीमति ऐडी द्वारा अपने प्रवचन में मदर चर्च के मौलिक हिस्से को श्रेय देते हुए बताए गए सत्य में आनन्द मना सकते हैं। एक ओस की बूँद सूर्य को प्रतिबिम्बित करती है। क्राइस्ट का हर एक छोटा शिशु अनन्त को प्रतिबिम्बित करता है और इसलिए दूरदर्शी की बात सत्य है "जो परमेश्वर की तरफ होता है, बहुमत उसके पास है।"

"पानी की एक बूँद सितारों को छिपाने या वृक्षों को फूलों का ताज पहनाने में सहायता कर सकती है (**Pulpit & Poem**, पृष्ठ 4) हम सब क्राईस्ट के छोटे शिशु है और इस प्रकार परमश्वेर की कृति में हमारा महत्वपूर्ण स्थान है।

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.